24/?/22 Muneli
B.A. Hons
Part III

डॉ॰ अनुपमा कुमारी
रसिक दास

(2)

मैया मैं तो चंद खिलौना लैहौं।
जैहौं लोटि धरनि पर अबही तेरी गोद न ऐहौं॥

बालकों में स्पर्धा की प्रवृत्ति होती है। स्पर्धा का अर्थ होता है दूसरों की बराबरी करने की इच्छा। कृष्ण बलराम की लम्बी चोटी देखकर ललचा जाते हैं। उनके मन में अपनी चोटी को भी उतनी ही लम्बी करने की चाह होती है। कृष्ण यशोदा से मन की बात कहते हैं। यशोदा कहती है कि - तू दूध पियेगा तो तेरी चोटी भी लम्बी हो जायगी। लगातार दूध पीने पर भी जब चोटी लम्बी नहीं होती तो वे यशोदा से शिकायत करते हैं —

मैया ~~[illegible]~~ कबहि बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

कृष्ण दही चुराकर खाते हैं। चोरी पकड़ी जाती है। माँ के पूछने पर मुँह का दधि पोंछकर बहाना बनाने लगते हैं। कैसा कई तरह के तर्क देते हैं। उत्तर में कृष्ण कहते हैं —

यह ले अपनी लकुट कमरिया
यह लो अपनी सोटी
तेरी कौन चराऊँ गैया
खाकर बासी रोटी॥

कृष्ण के उत्तर में वाग्विदग्धता है पर उनकी तुतली बोली में जो स्वाभाविकता है वह सूर के वात्सल्य का केन्द्र बिन्दु है।

वात्सल्य के दो पक्ष होते हैं - संयोग पक्ष और मातृ-पितृ पक्ष। संयोग पक्ष के बाद अब हम मातृ-पितृ पक्ष का वर्णन करते हैं। इस वर्णन में सूर ने यशोदा को बीच में लाकर खड़ा कर दिया है। वस्तुतः यशोदा को उपलक्ष्य करके सूर का वात्सल्य वर्णन शत-शत स्रोतों उद्वेलित हो उठा है। हर माँ की तरह यशोदा भी अपने कृष्ण को सयाना देखना चाहती है —

जसुमति मन अभिलाष करै।
कब मेरो लाल घुटुरुवन रेंगै कब धरनी पग द्वैक धरै।

हर माँ की तरह यशोदा भी चाहती है कि उसका पुत्र भी उसकी आँखों के सामने रहे। कृष्ण जब खेलने जाते हैं तब यशोदा आशंकित हो जाती है —